VOL- XI ISSUE- IX SEPTEMBER 2024 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 8.02 ISSN 2349-638x

भारतीय स्वतंन्त्रा संग्राम में महिलाओं की भूमिका

ममता गाबा
सहायक आचार्य (इतिहास)
राजकीय महाविद्यालय, हिन्दूमलकोट

"स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान भारत को महिलाऐं परिवर्तन की मूक निर्माता थी, अपने त्याग और अदम्य साहस से एक स्वतन्त्र राष्ट्र की नींव रखीं।"

प्रस्तावना –

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में महिलाओं के बलिदान और साहस की अनेक कहानियां है। १९वीं सदी में भारतीय महिलाओं ने सामाजिक मानदंडों से मुक्त होकर भेदभाव प्रथाओं को चुनौती दी। हमारे समाज सुधारकों ने भी महिला शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, बाल-विवाह समाप्त कर महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाने में योगदान दिया। स्वतन्त्रता संग्राम के आन्दोलन में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वाली महिलाऐं –

- **भीमा बाई होल्कर** – संघर्ष में महिलाओं की भागीदारी वर्ष १८१७ से शुरू हुई । भीमा बाई होल्कर ने ब्रिटिश कर्नल मैल्कम को गुरिल्ला युद्ध में हराया।
- **रानी लक्ष्मी बाई** – वर्ष १८५७ की क्रांति के दौरान ये बहादुरी से लड़ी और युद्ध के दौरान शहीद हुई।
- **हजरत महल बेगम** – यह लखनऊ के शासक की पत्नी थी। वर्ष १८५७ की क्रांति में इन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया।
- **कमला देवी चट्टोपध्याय** – प्रमुख समाज सुधारक, स्वतन्त्रता सैनानी, स्वदेशी को बढ़ावा देने और महिलाओं की सशक्त बनाने का काम किया।
- **कस्तूरबा गाँधी** – महिला शिक्षा सशक्तिकरण की वकालत की। स्वतंन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।
- **हंसा मेहता** – भारत की स्वतन्त्रता और महिला अधिकारों की वकालत करने वाले अंतर्राष्ट्रीय मंचो का हिस्सा रहीं।
- **प्रीतिलता वोडेयार** – बहादुर क्रांतिकारी ब्रिटिश क्लब पर हमले का नेतृत्त्व किया। इनका बलिदान और दृढ़ संकल्प द्वारा औपनिवेशिक उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
- **दुर्गाबाई देशमुख** – इन्होंने महिला अधिकारों श्रम अधिकारों और हाशिए पर पड़े लोगों के उत्थान के लिए संघर्ष किया।
- **सरोजनी नायडू** – वर्ष १९२५ में कानपुर अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष थी। भारत की महिलाओं की जागृत करने में अहम भूमिका निभाई व भारत की प्रथम महिला राज्यपाल रही थी।
- **अरूणा आसफ अली** – भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अग्रणी भूमिका निभाई। बाम्बे के ग्वालियर टैंक मैदान में राष्ट्रीय ध्वज फहराया।
- **रानी गारदिनल्यू** – अंग्रेजों के खिलाफ नागा राष्ट्रवादी महिला नेता की कमान संभाली थी।
- **मैडम मीका जी कामा** – ये दादा भाई नरौजी से प्रभावित थी। यूनाइटेड़ किंगडम में भारतीय युवाओं के लिए कार्य किया।

- **सुचेता कृपलानी** – समाजवादी विचारधारा वाली एक प्रखर राष्ट्रवादी थी। भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था।
- **राजकुमारी अमृत कौर** – वर्ष १९३० मे नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। स्वतन्त्र भारत की प्रथम महिला स्वास्थ्य मंत्री बनी।
- **एनी बेसेन्ट** – वर्ष १९१६ में उन्होंने मद्रास होम रूल लीग की शुरूआत की। इन्होंने थियोसोफिकल सोसाइटी ऑफ इण्डिया का गठन किया। वर्ष १९१७ में उन्होंने कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को पहली महिला अध्यक्ष के रूप कार्य किया।

गाँधी जी के स्वतन्त्रता आन्दोलन में महिलाओं का योगदान

- गांधी जी ने महिलाओं को जाति-वाद, बाल-विवाह के विरूद्ध लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।
- वर्ष १९२० से १९२२ में महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अरूणा आसिफ अली, सरला देवी तथा मुत्थू लक्ष्मी ने योगदान दिया।
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन में गाँधी के गिरफ्तार होने के बाद सरोजनी नायडू ने आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया। इन्होनें मताधिकार की लड़ाई लड़ी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष चुनी गई।
- भारत छोड़ो आन्दोलन के समय ऊषा मेहता, अरूणा आसफ अली जैसे कार्यकर्ताओं ने भूमिगत रहकर आन्दोलन का नेतृत्व किया।
- वर्ष १९२० में अधिकांश महिलाओं ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में प्रतिभाग लिया। इस समय बहुत सारी महिला कार्यकर्ता आगे आयी। उस समय भारतीय महिलाओं ने सामाजिक, आर्थिक सभी प्रकार के बन्धनों को दूर कर दिया। भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन मे बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं की अदम्य भावना और अटूट समर्पण देश के इतिहास का अभिन्न अंग है। उत्पीड़न को चुनौती देने, बदलाव की वकालत करने और स्वतन्त्रता के लिए योगदान देने के लिए उनके दृढ़ संकल्प ने एक स्थायी विरासत छोड़ी है। जब हम महिलाओं की अमूल्य भूमिका पर विचार करते है। तो हमें भारत के भाग्य को आकार देने और प्रगति और समानता को ओर चल रही यात्रा में महिलाओं द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका की याद आती है।

महिलाओं ने सड़क से जेल तक, जेल से विधायिका तक किस प्रकार साहस से आन्दोलन किया, इन संघर्षो और प्रयासों के बाद अन्त में १५ अगस्त, १९४७ को देश आजाद हुआ। मातृभूमि की आजादी के लिए स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में हजारों महिलाओं ने अपनी प्राणहुति दी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

(१) स्त्री संघर्ष का इतिहास – राधा कुमार (वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली)
(२) भारतीय समाज में नारी-नीरादासी – मैकमिलन
(३) गाँधी युगीन नारी जागरण – डॉ. राजन नटराजन (शुभंकर पिल्लै प्रकाशन)
(४) औरत इतिहास रचा है तुमने – कुसुम त्रिपाठी
(५) उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद और जेण्डर – प्रो. आशा शुक्ला एवं कुसुम त्रिपाठी महिला अध्ययन विभाग।
(६) पॉलिटिक्स एण्ड वीमेन इन बंगाल – तनिका सरकार, आई.ई.एस.एच.आर वर्ष २१ अंक जनवरी मार्च, १९९४
(७) नारीवादी राजनीति संघर्ष एवं मुद्दे – सं. साधना आर्य, दिल्ली विश्वविद्यालय निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता – दिल्ली – २००१